शिव
अवतरण

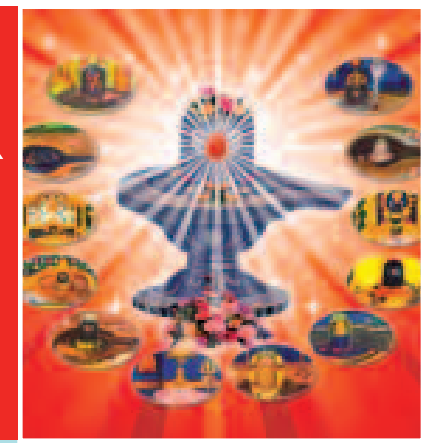

ओमशान्ति मीडिया

महाशिवरात्रि विशेषांक

विश्व रचयिता परमात्मा का उदय भारत में.....!

सभी अपने जीवन को देखो कि जब आपके जीवन में कभी कोई संकट आता है तो उस समय आप संसार के अपने मसीहों को याद करते हैं। जब इन सांसारिक मसीहों द्वारा ये मान लिया जाता है कि हम नहीं कुछ कर सकते तो आप बड़ी चात्रक नज़रों से ऊपर की तरफ देखते हैं और कहते हैं कि हे भगवान आप ही मुझे इस संकट से निकाल सकते हैं। कई बार निकाला है! वही निराकार परमात्मा विश्व रचयिता हम सभी का मात-पिता स्वयं धरा पर अवतरित होकर हमें बड़े स्नेह और प्यार से उन संकटों से मुक्ति दिला रहे हैं। भगवान शब्द वैसे भी ऐश्वर्यवान का वाचक है, तभी तो उसे लोग भजते हैं। वह दु:ख भंजक, संकट मोचन परमात्मा हमें फिर से अपनी याद दिला रहे हैं। उसके लिए दुनिया में कहावत है कि तेरी सत्ता के बिना, हे प्रभु मंगल मूल। पत्ता तक हिलता नहीं, खिले न कोई फूल।

मनुष्य बाज़ार में जाता है तो देखता है कि किसी जगह पर यह साइन बोर्ड लगा है– 'श्याम लाल आर्किटेक्ट'। दूसरी दुकान पर लिखा है– 'मनमोहन डेन्टिस्ट' (दाँतों का डॉक्टर)। तीसरी दुकान पर लिखा है– 'इलेक्ट्रीशियन'। तो वह इन-इन व्यवसाय वालों को याद रखता है ताकि अगर दाँतों में कभी दर्द हो तो वह उस डॉक्टर के पास जाकर इलाज करायेगा। जब मकान का नक्शा बनवाना होगा तो उस आर्किटेक्ट के पास जाकर नक्शा बनवा आयेगा और अगर बिजली-सम्बन्धी कोई कार्य कराना होगा तो उस इलेक्ट्रीशियन के पास पहुँचेगा। परन्तु जैसे उन-उन व्यक्तियों के वह-वह व्यावसायिक नाम हैं, वैसे परमात्मा के तो ऐसे अनेक कर्त्तव्यवाचक नाम हैं जिनसे सिद्ध होता है कि वो दु:खहर्ता, सुखकर्ता, पापों से मुक्त करने वाले, मनुष्य का कल्याण करने वाले, अमृत पिलाने और काल, कंटक तथा संकट दूर करने वाले हैं। तब भला मनुष्य परमात्मा के इन नामों रूपी 'साइन बोर्ड्स'की ओर क्यों नहीं ध्यान देता? वह परमात्मा के कर्त्तव्यवाचक नामों को जानते हुए भी उनके पास क्यों नहीं पहुँच पाता? जबकि आज वह दु:खी है और सुख चाहता है तो वह परमात्मा से सुख क्यों नहीं प्राप्त करता? मनुष्य अपने काल-कंटक दूर करने और भण्डारे भरपूर करने का यह उपाय क्यों नहीं करता? यदि उसे भगवान का सत्य परिचय होता तो आज रौनक ही कुछ और होती। और यही सबसे बड़ी विडम्बना है कि भगवान मानें तो किसको मानें? यदि हमने उस कल्याणकारी परमपिता का हाथ पकड़ा होता तो आज भारत की यह दशा थोड़े ही होती! स्पष्ट है कि उसे यह ज्ञान ही नहीं है कि– 'परमात्मा का परिचय प्राप्त करने की आवश्यकता है ताकि उसके दु:खों का अन्त हो और उसे सम्पूर्ण एवं स्थायी सुखों की प्राप्ति हो। इसके अलावा हमारे पास और कोई विकल्प नहीं है। इस समय हम दो कार्य कर सकते हैं। या तो मान लें कि भगवान है या फिर नहीं है। इससे आपकी दुविधा दूर हो जायेगी, क्यों? क्योंकि हमारे मानने न मानने से परमात्मा का अस्तित्व नहीं मिट जायेगा। वो है तो है। तो आओ एक कदम उसकी तरफ बढ़ायें ...।

हे आत्माओं अब तो पहचानो!जिसे आपने मन्दिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों में ढूंढ़ा, तीर्थ यात्राएँ की फिर भी मुझसे दूर रहे। मैं वही निराकार परमपिता आप सभी आत्माओं को फिर से दु:खों से उबारने, सतयुगी भारत बनाने और आप आत्माओं को शान्ति और सुख का वर्सा देने के लिए पुन: अवतरित हो चुका हूँ। अब तो जागो, मुझे पहचानो। बहुतों ने

कौन हैं शिव? रहते कहाँ हैं?

परमात्मा शिव देवों के भी देव महादेव ब्रह्मा, विष्णु और शंकर

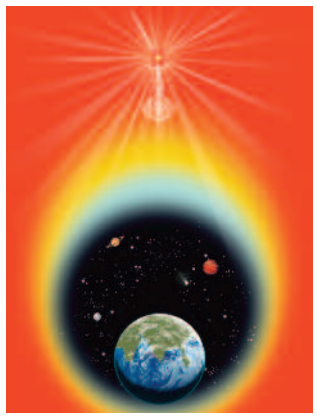

के भी रचयिता हैं जिन्हें हम त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकिनाथ, और तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी कहते हैं। विश्व की सभी आत्माओं, चाहे वो देव-आत्मा है, महान-आत्मा है, पुण्य-आत्मा है, धर्मात्मा है के पिता परमपिता परमात्मा शिव है। वह अजन्मा है अभोक्ता है। उनका रूप निराकार ज्योतिर्बिन्दु है, वो परमधाम निवासी है। शिव का अर्थ कल्याणकारी है। परमात्मा निराकार है इसका अर्थ यह नहीं की उसका कोई आकार नही है बल्कि उसका कोई शरीर नहीं है। आकार का अर्थ स्थूल आखों से न दिखने वाला सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है।

परमात्मा का निवास स्थान - परमधाम

देवताओं के सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है जिसको अखण्ड ज्योति महतत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह तत्व पाँच प्राकृतिक तत्वों से अति सूक्ष्म है। इसका भी साक्षात्कार दिव्य-चक्षु द्वारा ही हो सकता है। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परमधाम, मुक्तिधाम, शान्तिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है। हम अपना हाथ अथवा मुख ऊपर की ओर ही उठाते हैं क्योंकि जाने-अनजाने यह स्मृति परमपिता परमात्मा की है जो ऊपर परमधाम में निवास करते हैं।

कैसे दिखते हैं वो ?

सभी धर्मों में सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिन्ह या लक्षण। अत: शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का

रूप ज्योतिर्बिन्दु है। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है।अन्य प्रवित्र अवसरों पर ज्योति स्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृति में अपने घरों अथवा धार्मिक स्थानों, मन्दिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते हैं। भारत में विश्व के 12 प्रसिद्ध मठों को भी ज्योतिर्लिंग मठ कहा जाता है।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

आज चारो तरफ एक ही लहर है कि कोई हमारे मन को तसल्ली दे, हमें प्यार करे, हमारी भावनाओं को समझे। हमारे दिल को चैन व आराम देने के लिए दिलाराम परमात्मा शिव अब इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं और हम सभी इसका पूरा-पूरा सुख ले रहे हैं। मैं चाहती हूँ कि सभी उस दिलाराम परमात्मा का सुख लें। अब वो सुनहरी घड़ियाँ हम सबकी नज़रों के सामने होगी क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है।

भारत देश पुन: देवभूमि व धन-धान्य से सम्पन्न बनेगा जहां सुख, शान्ति व सम्पत्ति के अखुट भंडार होंगे। एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा होगी। ऐसी स्वर्णिम दुनिया का शुभ संदेश जन-जन तक पहुँचाना हमारा कर्त्तव्य है।

परमात्मा शिव की हम बच्चों प्रति यही शुभ आशाएं हैं कि हे बच्चों आपको जो कुछ मिला है वो जन-जन में बांटो और उसे बढ़ाते जाओ। हमने तो पहचाना, और लोग भी इसे पहचानें, ऐसा न हो कि कोई वंचित रह जाए, कोई उलाहना न दे। कोई यह न कहने लग जाए कि भगवान आया और आपने बताया नहीं। तो इस महाशिवरात्रि के अवसर पर चारो तरफ शिव-संदेश फैलाओ ताकि पूरे विश्व के कोने-कोने से एक ही आवाज़ आए कि हमारा परमात्मा शिव इस धरा मंच पर आ चुका है। इन्हीं शुभ आशाओं व शुभ भावनाओं के साथ आपको शिव जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ।

सभी ने उन्हीं को पूजा... व याद किया

परमात्मा के बारे में कहते हैं कि वो ऐसा है, वैसा है, परन्तु वो कैसा है, इसमें सभी असमंजस में रहे। आदिकाल से अब तक परमात्मा को सभी ने ज्योतिर्बिन्दु रूप में ही पूजा व याद किया है। चाहे वो यादगार लिंग रूप में हो या प्रकाश रूप में हो या किसी गोल पत्थर के रूप में हो। उसी निराकार परमात्मा शिव को सभी ने याद किया भी और उनकी यादगारें भिन्न-भिन्न स्थानों पर भी हैं जोकि कोई साकार प्रतिमा नहीं है बल्कि एक प्रतीक के रूप में है। उन्हीं यादगारों को सभी देवात्माओं, धर्मात्माओं, पुण्यात्माओं व महान आत्माओं ने भी याद किया।

ईसा मसीह ने परमात्मा को "दिव्य ज्योति" कहा

ईसा मसीह (जीज़स क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा है, गॉड इज़ लाईट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। जीज़स ने कभी यह नहीं कहा कि आई एम गॉड। उसने भी उस लाईट को परमात्मा का स्वरूप बताया।

हज़रत मूसा या इब्राहिम

ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा 'जेहोवा'। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं का प्रतीक है।

इक ओंकार, सत्नाम

सिक्खों के धर्म-स्थापक गुरु नानक ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वैर है, सत्नाम है, जिसको काल भी नहीं खा सकता। गुरु गोविन्द सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व की सभी आत्माओं के परमपूज्य परमपिता हैं।

मिस्र ने भी स्वीकारा परमात्मा का अस्तित्व

मिस्र में शिवलिंग की पूजा आईसिस और ओसिरिस नाम से होती थी। ओसिरिस शब्द "ईश" शब्द से बना है। शिवलिंग की प्रतिमा के साथ वे बैल की मूर्ति रखा करते थे।

मुस्लिमों के भी हैं नूर-ए-इलाही

भारत में परमपिता परमात्मा शिव के ज्योतिस्वरूप शिवलिंग की व्यापक स्तर पर मान्यता तो है ही, परन्तु भारत से बाहर भी दूसरे धर्मों के लोग भी इसको मान्यता देते हैं। मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी इसी आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे संग-ए-असवद् कहते हैं। परन्तु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है? उसको वे लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम् कहा, ज्योति स्वरूप कहा। ज्योति माना ही तेज। इसलिए मुसलमान जब नमाज़ पढ़ते हैं तो मक्का की दिशा में नमाज़ पढ़ते हैं। जिसको भारत वर्ष में मक्केश्वर कहा जाता है अर्थात् मुसलमानों के अल्लाह, नूर-ए-इलाही कहकर के निराकार को ही याद किया।

शिव, श्रीराम के भी आराध्य

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्री-राम ने भी की है। शिव श्रीराम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की

क्यों आवश्यकता हुई? वह जानते थे कि रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या, आराधना करके प्राप्त की थी। कहा जाता है कि रावण भी शिव का पुजारी था, तो शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए उस परम शक्ति परमात्मा की शक्ति के बिना वह युद्ध में विजयी नहीं हो सकते। अत: सिद्ध है कि उन्होंने भी शिव की आराधना की थी।

श्रीकृष्ण ने भी किया पूजन

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता सर्वशक्तिमान्, गुणों के भण्डार, नि-राकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों के ऊपर वि-जय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं ।

पारसियों में भी ज्योति रूप परमात्मा मान्य

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है कि पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं जो सदा जलती आई थी, जो सदा अखण्ड है, परमात्मा का दिव्य स्वरूप है। तो इस धर्म में ज्योति स्वरूप पिता परमात्मा की ही मान्यता है।

गिरजाघर का रहस्य

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

शंकर ने भी किया शिव का ध्यान

कुछ लोग 'शिव' और 'शंकर' में अंतर नहीं समझते। वे कहते हैं कि शिव और शंकर एक ही इष्ट के दो नाम हैं। अब प्रश्न उठता है कि 'शिवलिंग' नामक प्रतिमा और 'शंकर' की देवाकार मूर्ति– ये दो अलग, भिन्न-भिन्न रूप वाले स्मरण-चिन्ह क्यों हैं? किसी व्यक्ति के पिता को उसके मित्र 'गुप्ता जी' अथवा 'रमेश चन्द्र जी' और उसके माता-पिता 'रम्मू' अथवा 'मेशी' कहकर पुकारते हों, यह तो हो सकता है परन्तु उस व्यक्ति का छायाचित्र अथवा कलाकार द्वारा बनाई उसकी प्रतिमूर्ति एक ही रूप की होगी न? बाल रूप की और वृद्ध रूप की दो अलग रूप वाली फोटो भी हो सकती हैं जिनमें काफी अंतर दिखाई देता हो परन्तु दोनों सशरीर, सकाय अर्थात् पिण्ड धारण किये हुए तो होंगे न? परन्तु शिव पिण्डी तो अण्डाकार ही होती है और शंकर की मूर्ति अंग-प्रत्यंग सहित ही सदा स्थापित और पूजित होती है, यहाँ तक कि उस देवाकार मूर्ति का कोई अंग थोड़ा भी खण्डित हो जाए तो उस अंग-भंग मूर्ति को पूजा के योग्य ही नहीं माना जाता। फिर शिव की मण्डलाकार प्रतिमा को तो 'ज्योतिर्लिंगम' ही माना जाता है जबकि शंकर जी को यह संज्ञा नहीं दी जाती। अन्यश्च, शंकर जी को तो समाधिस्थ ही प्राय: दिखाया जाता है जो इस बात का प्रतीक है कि वे स्वयं किसी ध्येय के ध्यान में मन को समाहित किये हुए हैं जबकि शिव पिण्डी में कोई ऐसा भाव प्रदर्शित न होने से वह स्वयं ही परम-स्मरणीय है। अत: दोनों का अंतर प्रत्यक्ष ही है। फिर भी इसको एक ओर रख कर कुछ लोग शिवलिंग को पृष्ठ- भूमिका में देकर उस पर शंकर की मुखाकृति आं-कित कर देते हैं और अन्य कई चित्रकार शंकर जी से ज्योतिर्लिंग को प्रकट होता हुआ दिखा देते हैं और पुराणों में तो ऐसी भी कथायें अंकित हैं कि 'शिव' 'शंकर' जी का ही एक शरीर-भाग है! सचमुच, यह तो मनुष्य की अज्ञानता की पराकाष्ठा ही है कि वे एक ओर खण्डित काया वाले देव की पूजा नहीं करते और दूसरी ओर वे किसी एक ही शरीर-भाग की पूजा की बात कहते हैं। स्पष्ट रूप से यह बात विवेक-विरुद्ध है।

जापान में चिंकोनसेकी का स्मरण

जापान में शिकोनिज़म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊंचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। उसका नाम दिया है चिंकोनसेकी जिसका अर्थ शान्ति का दाता है और वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिस्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी देश के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं।

ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन,तलेटी
e-Mail:- mediabkm@gmail.com
omshantimedia@bkivv.org
M-8107119445, 9414006096

-:स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता:-

शिव का अवतरणोत्सव – 'शिवरात्रि'

आत्माओं का जन्म होता है और परमात्मा का अवतरण। आत्मा और परमात्मा में यही प्रमुख अंतर है। कर्म-बन्धन के कारण गर्भ से उत्पन्न होने पर आत्माएं जन्म-मरण के चक्र में पड़ जाती हैं। लेकिन परमात्मा का आवागमन नहीं होता। वह पुनर्जन्म के चक्र से परे है। कर्मातीत होने के कारण परमात्मा किसी के गर्भ में नहीं आता। कोई माँ उस सर्वशक्तिमान् को अपने गर्भ में धारण नहीं कर सकती। जगत्-पिता का कोई पिता नहीं हो सकता। परमात्मा शिव स्वयंभू हैं। सर्व-आत्माओं के कल्याणार्थ वे अवतरित होते हैं अर्थात् परकाया प्रवेश करते हैं। वे योग-बल से प्रकृति को वश में कर एक मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं और उसके मुख द्वारा सर्व जीवात्माओं को प्राय: लुप्त गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर अधर्म का विनाश तथा सत्-धर्म की पुनर्स्थापना कराते हैं। भारतवर्ष में योगियों के परकाया प्रवेश की बात तो सर्व-विदित है। फिर परमात्मा शिव तो योगियों के भी ईश्वर हैं।

परमात्मा का अवतरण ज्ञान-योग की शिक्षा देकर जीवात्माओं को पतित से पावन बनाने के लिए होता है। यदि वे गर्भ से जन्म लें तो

गर्भ का समय और बाल्यावस्था का समय व्यर्थ चला जाये। युवावस्था भी बुज़ुर्गों को शिक्षा देने के लिए उपयुक्त नहीं है। आध्यात्मिक शिक्षा तो वानप्रस्थ अवस्था में ही प्रभावोत्पादक ढंग से दी जा सकती है, जब मनुष्य अनुभव-सम्पन्न हो जाता है। गर्भ से जन्म लेने पर परमात्मा को ज्ञान देने के पूर्व पचास वर्ष शरीर को परिपक्व बनने की प्रतीक्षा में लगाना पड़ेगा। अत: परमात्मा एक वृद्ध, अनुभवी तन में दिव्य-प्रवेश करते हैं और उसके द्वारा तुरंत ही ज्ञान-योग की शिक्षा देने लगते हैं। बीसवीं शताब्दी में इसी तरह का एक असफल प्रयोग किया गया था। अपने महापरिनिर्वाण से पूर्व बुद्ध ने कहा था कि 2500 वर्ष से पूर्व ही मैं मैत्रेय नाम से दोबारा जन्म लूँगा क्योंकि उस समय पुन: धर्म-ग्लानि हो जायेगी। थियोसॉफी के कर्णधार एनीबेसेन्ट आदि को अनुभव हुआ कि बुद्ध की आत्मा जन्म लेने को उत्सुक है लेकिन वैसी शक्तिशाली आत्मा के लिए उपयुक्त गर्भ नहीं मिल रहा है। उन्हें लगा कि उपयुक्त गर्भ के अभाव में ऐसा स्वर्ण-अवसर सदा के लिए खो जायेगा। अत: उन्होंने दूसरा विकल्प चुना। उन्होंने विचार किया कि एक मनुष्य को इतना तैयार किया जाए कि वह अपनी आशा, आकांक्षा और अहं को विसर्जित कर मैत्रेय के अवतरण के लिए उपयुक्त वाहन बन जाये। उन्होंने इस कार्य के लिए कई प्रतिभा-सम्पन्न लड़कों को चुना जिसमें कृष्णमूर्ति और उनके भाई भी थे। प्रयोग के मध्य ही कृष्णमूर्ति के भाई की मृत्यु हो गई तो उन्होंने सारा ध्यान कृष्णमूर्ति पर लगाया। एनी बेसेन्ट उन्हें इंग्लैण्ड ले गई और उस समय के सर्व श्रेष्ठ शिक्षकों द्वारा उन्हें शिक्षा दी गई। कृष्णमूर्ति को सर्वोत्तम शिक्षा दी गई और उन्होंने मैत्रेय का वाहन बनना स्वीकार कर लिया। विधिवत घोषणा कर दी गई कि अमुक तिथि को अमुक समय कृष्णमूर्ति अपने अहमत्व को पूर्ण रूपेण त्याग देंगे और मैत्रेय की आत्मा उनमें प्रवेश कर जायेगी। फिर उनके माध्यम से मैत्रेय की आत्मा ही अपना सारा कार्य करेगी। विश्व-इतिहास के इस अभूतपूर्व दृश्य को देखने के लिए विश्व-भर के थियोसॉफिस्ट एकत्रित हुए। लेकिन ठीक समय पर कृष्णमूर्ति ने विद्रोह कर दिया और मैत्रेय का वाहन बनना अस्वीकार कर दिया। इस दुर्घटना से थियोसॉफी आंदोलन को इतना गहरा धक्का लगा कि फिर वह सम्भल न सका।

हाँ, परमात्मा को हमने अनुभव किया...

परमात्मा ने मुझे गोदी में बिठाया

समस्त विश्व में ऐसी व्यवस्था नहीं है जैसी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में है। यह अनुभव करने की बात है, बयान करने की बात नहीं है। मैं जब माउण्ट आबू में परमात्म मिलन के अवसर पर पहुँचा तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे एक छोटे बच्चे को अपने घर में माँ-बाप की गोद में होता है। ऐसा लगा मानो वो मुझे सहला रहे हैं। यहाँ के पवित्र वातावरण और व्यवस्था जैसी पारदर्शिता संसार में और कहीं नहीं।- **महामण्डलेश्वर दर्शन सिंह त्यागमूर्ति,** अध्यक्ष षड्दर्शन साधु समाज एवं धर्म स्थान सुरक्षा ट्रस्ट, हरिद्वार

इस ज्ञान से ही सुंदर भविष्य संभव

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की पढ़ाई का पहला उद्देश्य है कि व्यक्ति पहले स्वयं को जाने कि मैं कौन हूं, मेरा कर्त्तव्य क्या है, मेरे माता-पिता कौन हैं, अपना असली देश क्या है, अपनी संस्कृति क्या है? मेरा मानना है कि आज जिस प्रकार शिक्षा पद्धति पश्चिमी होती जा रही है तो अगर उसको फिर अपनी संस्कृति की ओर लाना है तो इसके लिए ऐसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का होना आवश्यक है। आज समाज की सबसे बड़ी ज़रूरत शांति है जो कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ही समाज को प्राप्त हो सकती है। उन्हीं के ज्ञान से सुंदर भविष्य आयेगा और समाज तथा राष्ट्र को उत्कृष्ट करेगा। **-शास्त्री जीवनदास,** मैनेजिंग ट्रस्टी श्री स्वामी नारायण गुरुकुल।

आबू में साक्षात् भगवान से मिलन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में शान्ति व सद्भाव का संदेश दिया जाता है। माउण्ट आबू में आने पर मुझे स्वर्ग जैसा अनुभव हुआ। हम साक्षात् भगवान से मिले, उन्होंने हमसे बात की। पैसों से मखमल के गद्दे तो खरीदे जा सकते हैं, बढ़िया बिस्तर भी लिए जा सकते हैं परन्तु गहरी नींद अध्यात्म से ही प्राप्त हो सकती है। इस संस्था के सम्पूर्ण विश्व में स्थापित होने के कारण आध्यात्मिकता चारो ओर फैल रही है जो कि समाज के लिए ऑक्सीज़न का काम कर रही है। **- महामण्डलेश्वर श्री जनार्दन महाराज** सतपंत, फैजपुर।

इस मिलन से भावातीत हुआ

जीव ईश्वर से कैसे मिले इसका ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ही दिया जाता है। यहाँ योग, ध्यान, साधना, उपासना तथा आराधना की जो शैली सिखाई जाती है, उसी से आत्मा एवं परमात्मा का मिलन संभव है। संसार परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। डायमण्ड हॉल में बाबा मिलन पर मुझे दिव्य अनुभव हुआ और साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई। **-रसिक पीठाधीश महंत जन्मजेयशरण,** अध्यक्ष श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, जानकी घाट, बड़ा स्थान, अयोध्या

यह ईश्वर ही बोल सकता है

ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव इस विश्वविद्यालय में देखने को मिलता है। चाहे वह मुरलियों के माध्यम से हो, चाहे दादियों-दीदियों के माध्यम से हो, यहाँ जो वाणियाँ सुनने को मिलती हैं वे साक्षात् ईश्वर की ही लगती हैं। जो जीने का ढंग इस संस्था में बताया जाता है वह सब सम्प्रदायों से उठकर है और समाज के उत्थान के लिए है। अव्यक्त बाबा से मिलने पर भी मेरा अनोखा अनुभव रहा। ऐसा प्रतीत हुआ कि दादी नहीं, वहाँ ब्रह्मा बाबा ही बैठे हैं। **-जसवीर सिंह,** राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष।

इस एहसास को भूल नहीं सकता

इस ईश्वरीय ज्ञान से हमारे लाइफ के प्रति जो सोचने का नज़रिया होता है वो बिल्कुल ही बदल जाता है। ये एक बिना दवाई के वण्डरफुल ट्रीटमेंट है। मन की ऐसी कई बीमारियां हैं जिनकी कोई दवाई नहीं की जा सकती, लेकिन यहां मेडिटेशन के प्रैक्टिस से तथा परमात्मा की याद से ये बीमारियां पूरी तरह ठीक हो जाती हैं। पहली बार जब मैं बाबा से मिला तो मेरे शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गए थे और आज भी मैं परमात्मा के उस मिलन को भूल नहीं पाता। **-डॉ.एस.पी.लोचड,** सीनियर साइन्टिस्ट, हेल्थ फिज़िक्स डिपार्टमेंट, न्यूक्लियर साइंस सेंटर, नई दिल्ली

'मैं' ब्रह्मा के मस्तक से प्रकट हुआ...

शिव पुराण में भी लिखा है कि भगवान शिव ने कहा – ''मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट होऊँगा।'' आगे लिखा है कि ''इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम 'रुद्र' हुआ।'' शिव पुराण में यह भी लिखा है कि ''जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ और इस कारण वह निरुत्साहित थे, तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।'' शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उन द्वारा सतयुगी सृष्टि को रचा। इस पौराणिक उल्लेख का यह भी भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क (ललाट) में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया। महाभारत में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और सतयुग की पुन: स्थापना की।

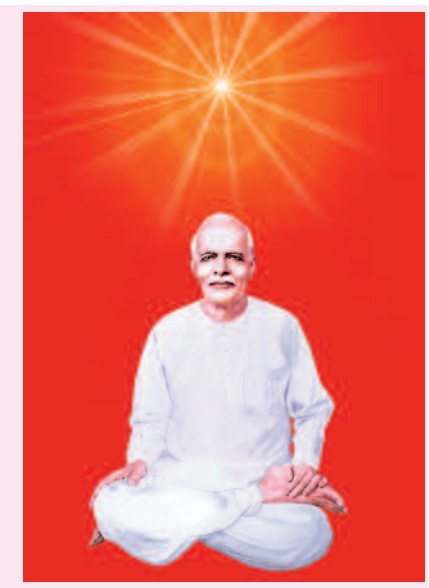

ये मेरे पल यादगार बन गए

जो पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शिव बाबा हैं उनसे ध्यान लगाकर, मार्गदर्शन लेने का जहाँ एकत्रिकरण हो, जहाँ सभी लोग एक साथ बैठकर उनकी अनुभूति करें, वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय। जो विद्या साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति करा दे यह वही ज्ञान है। अगर विश्व में सुंदरतम से सुंदरतम कोई नगर है तो वह है माउण्ट आबू में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम। ईश्वर की प्राप्ति केवल यहीं हो सकती है।

-डॉ.स्वामी केशवानंद सरस्वती, काशी

भगवान ही प्यार कर सकता है

दुनिया के सम्बन्धों में जो भासना आती है उसमें मुझे हमेशा मोह की फीलिंग आती थी, उसमें रोना भी आ जाता था। मैं सोचता था कि कोई मुझे ऐसा मिले जो मुझे भरपूर सुख दे और उसके बदले में मुझसे किसी चीज़ की उम्मीद ना करे। उसी की भरपाई परमात्मा ने की और ऐसी की कि मै भरपूर हो गया। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय वस्तुत: एक देवत्व को गढ़ने वाला विश्व विद्यालय है। मुझे जो यहाँ आकर परमात्मा से मिलकर जो इन्द्रियातीत अनुभव हुए, मैं चाहता हूं कि सम्पूर्ण जनमानस इसका सुख ले। मुझे अब लगता है कि परमात्मा मेरा हो चुका है और मैं बहुत सुखी हो गया। यह आध्यात्मिक ज्ञान सम्पूर्ण मानव समाज के लिए एक ऐसा पाथेय है जिससे मनुष्य का नैतिक जीवन तो सुधरता ही है और साथ-साथ उसका अन्तर्मन भी निर्मल होता जाता है। **- पी.के सिंह,** डिप्युटी डायरेक्टर जनरल दूरदर्शन, दिल्ली।

महापरिवर्तन की नींव पड़ चुकी है!!!

एक मान्यता है कि जहाँ विरोध है वहीं परिवर्तन है। परन्तु क्या वो परिवर्तन सर्वमान्य व स्थायी है? शायद नहीं ! क्योंकि जब हमें शान्ति स्थापन करनी है तो हम विरोध क्यों करें? बस यही कार्य निर्विरोध रूप से परमात्मा हमसे करवा रहे हैं और उसकी नींव उन्होंने भारत के माउण्ट आबू में रख दी है। आज मानवीय स्थिति को बदलने के लिए या यूं कहें कि महापरिवर्तन के लिए वो शान्ति के सागर परमात्मा शिव इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं!

एक मान्यता प्रचलित है कि जब किसी चीज़ का विरोध होता है तभी परिवर्तन होता है। परन्तु आज के समय में वो परिवर्तन सर्वमान्य व स्थायी नहीं माना जाता, क्योंकि उसे सहज भाव से लोगों ने स्वीकारा नहीं होता है। मदर टेरेसा भी उन रैलियों में नहीं जाती थीं जहां विरोध होता था। उनका कहना था कि यदि आप शांति स्थापन करना चाहते हैं तो उसे शांति से करें ना कि विरोध से। इसी श्रृंखला में भारत भूमि पर बड़े सहज व शान्तिमय तरीके से महापरिवर्तन आरंभ हो चुका है। स्वयं परमात्मा ने इसका बीड़ा उठाया है। सुनकर आपको आश्चर्य ज़रूर लग रहा होगा लेकिन ये बात सम्पूर्ण रूप से सत्य है। अरावली की श्रृंखला में बसा एक पवित्र स्थान माउंट आबू महापरिवर्तन के लिए एक अनुपम उदाहरण बन चुका है। यहां पर स्वयं संकट हर्ता, सुख दाता सर्व आत्माओं के पिता परमपिता शिव परमात्मा निराकार ज्योतिर्बिन्दु अपने साकार माध्यम पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हो, ब्रह्मा वत्सों ब्रह्माकुमार व ब्रह्माकुमारियों के द्वारा महापरिवर्तन का कार्य युद्ध स्तर पर कर रहे हैं। यह परिवर्तन स्वैच्छिक है अर्थात् यहां कोई दबाव ज़बरदस्ती नहीं है। परमात्मा सबसे पहले सभी आत्माओं को उसके स्वयं का परिचय देते कि तुम एक सुंदर शक्तिशाली अविनाशी आत्मा हो। परन्तु बहुत काल से इस अज्ञानता के कारण अपने आप को शरीर समझते हो जिसके कारण दु:ख व अशांति का माहौल बना हुआ है। बस यही एक परिवर्तन है जो हमें उस स्वर्णिम संसार की तरफ ले जाएगा। जब सभी अपने आप को इस महापरिवर्तन में कि ''मैं एक अविनाशी शांत आत्मा हूं और मेरे अंदर मेरे अविनाशी सातों गुण मौजूद है, मैं सतोगुणी हूँ''बस यही हमें स्वर्णिम संसार की तरफ रुख करने में मदद करेगा।

यह कार्य 79 वर्षों से निरंतर जारी है। यहां पर देश- विदेश के बहुत सारे कर्णधारों ने परिवर्तन कर स्वर्णिम दुनिया में आने हेतु अपना पंजीकरण करा लिया है। महापरिवर्तन की इस पावन वेला में परमात्मा शिव आप सबका भी आह्वान कर रहे हैं। आओ मेरे लाडले बच्चों मैं आपके लिए ही तो इस धरा, कलियुगी संसार को सतयुगी संसार बनाने के लिए ही तो अवतरित हुआ हूँ। पूरे विश्व के 137 देशों में लगभग 9 हज़ार से भी अधिक सेवाकेंद्र, उसमें पच्चीस हज़ार से भी अधिक समर्पित भाई एवं बहनें अपनी सेवाएं जनहित के कार्य के लिए दे रहे हैं। एक चरणबद्ध तरीके से परिवर्तन हेतु निरंतर राजयोग का अभ्यास और उससे सम्बन्धित बातें सीखने से हम अपने जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर सकते हैं। तो आओ इस दिशा में अपना पहला कदम तो बढ़ाओ!...

परमात्मा 'शिव' गीता ज्ञान दाता

सभी आत्माओं, महात्माओं, देवात्माओं आदि का परमपिता एक है। उसे ही 'भगवान' अथवा 'परमात्मा' कहा जाता है। ज्ञान, शान्ति, आनंद, प्रेम और पवित्रता का सागर भी वह एक ही है। यह महिमा अन्य किसी भी सामान्य आत्मा, महात्मा, देवात्मा आदि की नहीं हो सकती। इस दिव्य कर्त्तव्य के लिए वह दिव्य जन्म लेता है, वह माता के गर्भ से जन्म नहीं लेता, वह शैशव आदि अवस्थाएं या राज्य-भाग्य तथा सुख-सम्पत्ति नहीं भोगता क्योंकि वह अभोक्ता और कर्मातीत है। वह सारी सृष्टि का माता-पिता, अविनाशी शिक्षक तथा एकमात्र सद्गुरु अर्थात् सद्गति दाता है। निराकार शिव वास्तविक रूप में परमात्मा का नाम है। परमात्मा अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा जो ज्ञान देता है वो अति सहज है जिसे कोई भी अपना सकता है। गीता शब्द गीत से बना है, चूंकि गीत बहुत ही मधुर और मनमोहक होता है जिसे सभी लोग सुनते हैं और आनंद विभोर हो जाते हैं। वैसे ही यह ज्ञान भी एक गीत की तरह है जिसे बहुत ध्यान से सुनकर उस पर अमल कर उसका

आनंद ले मनमोहक 'कृष्ण' पैदा होता है। परमात्मा शिव सच्चा गीता ज्ञान दाता है, जिस गीता को सुनकर ही मनमोहन की तरह बना जा सकता है। श्रीमद्भगवद् गीता के लिए संसार में लोग कहते हैं कि इसे सुनकर मोक्ष व स्वर्ग की प्राप्ति होती है और जीवन के अंतिम क्षणों में गीता ज़रूर सुननी चाहिए, ये एक मान्यता है। ये विचारणीय है कि बहुतों ने इस जीवन के दौरान और अंतिम क्षणों में गीता सुनी व पढ़ी है लेकिन क्या उन्हें मोक्ष या स्वर्ग मिला होगा? आज उसी मोक्ष व स्वर्ग को दिलाने के लिए परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित हो सहज गीता ज्ञान से स्वर्णिम संसार लाने का अद्भुत कार्य कर रहे हैं। वैसे भी गीता में वर्णित है कि मुझ परमात्मा को समझने व जानने के लिए दिव्य चक्षु अर्थात् दिव्य ज्ञान चाहिए। उसके बिना मैं जाना नहीं जा सकता। भगवान शिव के इस ज्ञान को ही गीता कहा जाना चाहिए, ऐसा हमारा मानना है। जिसे सभी समझकर उस राह पर चल अपने जीवन में अपनाकर देवत्व ला सकते हैं। गीता-ज्ञान उस ज्ञान का सागर, पतित पावन, सर्व आत्माओं के परमपिता, मानव को देवता बनाने वाले, एक मात्र भगवान 'शिव' ने दिया था, जो कि श्रीकृष्ण के भी परमपिता हैं। श्रीकृष्ण ने तो उन परम सद्गुरु शिव से ही वह श्री नारायण पद प्राप्त किया था। इसलिए वृन्दावन में गोपेश्वर का मंदिर है जिसमें दिखाया गया है कि भगवान शिव श्रीकृष्ण के भी पूज्य हैं और गोप-गोपियों के भी मान्य ईश्वर हैं।

दुनिया के नियंता ने बनाया प्रथम अभियंता

दादा लेखराज को हुआ था नई दुनिया की स्थापना एवं कलियुग के विनाश का साक्षात्कार

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ।

दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आई। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निराकार परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने परिचय दिया कि:-

निजानन्द् स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम्
आनन्द स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम्
प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम्

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यहीं से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के सृष्टि परिवर्तन का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

व्यर्थ से मुक्ति मिली

सभी को जीवन जीने की कला परमात्मा स्वयं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से देते हैं। इसीलिए इसे गॉडली यूनिवर्सिटी कहा जाता है। जब मैं परमात्मा से मिला तो मेरे सारे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो गए और पॉज़ीटिव संकल्पों की रचना होने लगी, मेरे शरीर में ऊर्जा का सतत् प्रवाह होने लगा और ऐसा अनुभव हुआ कि इसके अलावा दुनिया में सब कुछ सारहीन है। इस ज्ञान के द्वारा जो हमें एकाग्रता की शक्ति मिली है उसके द्वारा हमें दो पार्टियों के बीच मतभेद को सॉल्व करने में बहुत मदद मिलती है। इस दुनिया का परिवर्तन इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ही संभव है। **-बी.डी. राठी,** हाई कोर्ट जज, ग्वालियर

हाँ, परमात्मा से मिल चुका हूँ

यह एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ जाति, धर्म, देश का कोई भेदभाव नहीं है। यहाँ ही वह शिक्षा मिलती है जिससे हम स्वयं को और परमात्मा पिता को पहचान सकते हैं। यह और संस्थाओं से भिन्न है क्योंकि यहाँ सभी को उच्च संस्कार जागृत करने की शिक्षा मिलती है। मैं इस संस्था में आकर स्वयं निराकार परमात्मा से मिला, उनसे बात की। उस अनुभव को बयान करना भी मुश्किल है। किसी भी धर्मपिता, महान नेता ने विश्व की इतनी सेवा नहीं की है जितनी परमात्मा शिव के प्रवेश के पश्चात् ब्रह्मा बाबा ने की। **-वी.ईश्वरैय्या, पूर्व एक्टिंग चीफ जस्टिस,** आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय

परमात्मा शिव बना रहे मनुष्य को देवता

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, और विद्यालयों व संस्थाओं से अलग इसलिए है क्योंकि इसकी स्थापना स्वयं परमात्मा शिव ने की है। इस विश्व विद्यालय का उद्देश्य है मनुष्य को देवता बनाना। परमात्मा से मिलने के बाद हमारा जीवन दिव्यता से भर जाता है, हमारे जीवन में आध्यात्मिक उन्नति आने लगती है और वो दिव्य शक्तियां प्राप्त होती हैं जिनका हम हर परिस्थितियों में उपयोग कर सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। **-धरमेश,** सिटिंग जज, राजकोट।